ॐकार प्रधान

तुकाराम महाराज द्वारा रचित अभंग

गायिका : लक्ष्मी जोयस वेल्स

© Ⓟ१९९५ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।
कृपया इसकी प्रति न बनाएँ, इसे रिकॉर्ड या वितरित न करें।

ॐकार प्रधान

ध्रुवपद

ॐकार प्रधान रूप गणेशाचे।
हे तिन्ही देवांचे जन्मस्थान॥

श्रीगणेश ॐकार के उद्गम हैं।
वे तीनों देवों के जन्मस्थान हैं।

पद १

अकार तो ब्रह्मा उकार तो विष्णु।
मकार महेश जाणियेला॥

इस सत्य को समझें : ॐ में 'अ'कार ब्रह्मा हैं, 'उ'कार विष्णु हैं, 'म'कार महेश हैं।

पद २

ऐसे तिन्ही देव जेथोनि उत्पन्न।
तो हा गजानन मायबाप॥

इस प्रकार तीनों देवों की उत्पत्ति हुई।
वे गजानन हैं, माता-पिता हैं।

पद ३

तुका म्हणे ऐसी आहे वेदवाणी।
पहावी पुराणी व्यासाचिया॥

तुकाराम कहते हैं, "यह वेदवाणी है।
आप व्यास जी के पुराणों में इस विषय में पढ़ सकते हैं।"

तुकाराम महाराज द्वारा रचित अभंग 'ॐकार प्रधान' पर व्याख्या

स्वामी शान्तानन्द द्वारा लिखित

अभंग 'ॐकार प्रधान' इस शीर्षक का अर्थ है, 'ॐ का उद्गम।' यह अभंग यानी भक्तिगीत तुकाराम महाराज द्वारा रचित है जो भारत के एक महान सन्त-कवि थे।

तुकाराम महाराज सत्रहवीं शताब्दी के सन्त-कवि थे जो महाराष्ट्र राज्य के देहू नामक गाँव में रहते थे। वह काल भारत के सन्तजनों का स्वर्णिम काल था; जिनमें से कई सन्त तुकाराम महाराज जैसे सन्त-कवि थे और इतिहासकार जिसे भक्ति-आन्दोलन कहते हैं, उसका भाग थे।

उस समय यह परम्परा थी कि आम लोगों को [यानी उन्हें जो विद्वान नहीं थे] संस्कृत भाषा सीखने की अनुमति नहीं थी—और इसलिए वे उन शास्त्रों को नहीं पढ़ पाते थे जो संस्कृत भाषा में लिखे होते थे।

तथापि, सन्त-कवियों को—जिनमें से कुछ स्वयं मोची, किसान, कुम्हार, माली व इसी प्रकार के अन्य कार्य करते थे—शास्त्रों में दी गई सिखावनियों का और उनमें वर्णित अन्तर-आध्यात्मिक अवस्थाओं का प्रत्यक्ष अनुभव था। यह पवित्र ज्ञान हरेक को सुलभ हो सके इसलिए उन्होंने भारत की स्थानीय भाषाओं और बोलियों में हृदयस्पर्शी कविताएँ, भक्तिगीत और यहाँ तक कि आध्यात्मिक जीवन पर ज्ञानवर्धक ग्रन्थ लिखे। इससे, परम सत्य का स्वरूप समझने के लिए किसी को महान विद्वान होने की आवश्यकता नहीं थी।

यह अभंग, 'ॐकार प्रधान' ऐसा ही एक भक्तिगीत है। इसके ध्रुवपद में तुकाराम महाराज यह उद्घोषित करते हैं कि आदि नाद ॐ का 'प्रधान' यानी ॐ का उद्गम और स्रोत भगवान श्रीगणेश हैं।

वेदान्त दर्शन के अनुसार, ॐ परम चेतना की प्रथम अभिव्यक्ति है। इसके अतिरिक्त, भारत के सभी प्रमुख दर्शनशास्त्रों की तरह ही वेदान्त यह सिखाता है कि परम चेतना के दो मुख्य पहलू हैं। एक है निराकार, जो सभी प्रकार की सीमाओं से परे है और जिसका कोई रूप या आकार नहीं है, और दूसरा है साकार जो सृष्टि में सभी रूपाकार धारण करता है—विशाल आकाशगंगाओं से लेकर पृथ्वी ग्रह तक, भव्य पर्वतों से लेकर छोटे-से-छोटे फूलों तक, समुद्र में रहने वाले जीवों से लेकर मनुष्य तक, सब कुछ। भगवान को उनके निराकार और साकार, दोनों रूपों में जाना जा सकता है और उनकी आराधना की जा सकती है।

भगवान श्रीगणेश ॐ के उद्गम हैं, ऐसा कहकर तुकाराम महाराज यह समझा रहे हैं कि भगवान श्रीगणेश परम चेतना *ही* हैं। दूसरे शब्दों में कहें तो सन्त तुकाराम साधकों को भगवान श्रीगणेश के साकार रूप द्वारा निराकार का आवाहन करने, सम्मान करने व आराधना करने का एक साधन प्रदान कर रहे हैं।

इस अभंग में तुकाराम महाराज श्रोताओं को इन परमप्रिय देवता श्रीगणेश के दृष्टिगोचर स्वरूप अर्थात् बाल गजाननस्वरूप [जिसमें उनका शरीर बालक का और मुख हाथी का दर्शाया जाता है] से उस तत्त्व की ओर ले जा रहे हैं जो समय व स्थान से परे है, शाश्वत आदि नाद है। तुकाराम महाराज कहते हैं कि भगवान श्रीगणेश, ॐकार हैं, वह पावन अक्षर जो ॐ नाद के रूप में प्रतिध्वनित होता है।

देखने में भगवान श्रीगणेश का गोलाकार शरीर व उनकी मुड़ी हुई सूँड़, संस्कृत भाषा की लिपि देवनागरी के 'ॐ' आकार को दर्शाती है। इसी कारण भगवान श्रीगणेश का एक नाम है 'ॐकारस्वरूप' जिसका अर्थ होता है, 'ॐ के मूर्तरूप।'[१]

भगवान श्रीगणेश का एक अन्य नाम 'गजानन' भी है, जिसका अर्थ है, 'गजमुख या हाथी के मुख वाले,' और तुकाराम महाराज अपने अभंग में इसी नाम का आवाहन करते हैं। इस नाम की शब्द-व्युत्पत्ति महत्त्वपूर्ण है : 'ग' अक्षर का अर्थ है, 'नाद' या 'ध्वनि' और 'ज' का अर्थ है, 'उत्पन्न होना' या 'जन्म होना।' अतः 'गजानन' नाम से तात्पर्य है, ब्रह्माण्ड के मूल में स्थित सूक्ष्म स्पन्दन से सभी चीज़ों का जन्म होना।[२]

इस तरह, तुकाराम महाराज भगवान श्रीगणेश को 'तीन देवों' के उद्गम के रूप में देखते हैं। ये तीन देव—भगवान ब्रह्मा, भगवान विष्णु और भगवान शिव—उन शक्तियों को दर्शाते हैं जिनके द्वारा परम चेतना इस ब्रह्माण्ड को प्रकट करती है, उसका पालन करती है और उसका संहार करती है। तुकाराम महाराज इन कृत्यों को उन तीन ध्वनियों, अ-उ-म् से जोड़ते हैं, जिनसे मिलकर ॐ बना है।

सृष्टिकर्ता ब्रह्मा, जिन्हें 'अक्षर' भी कहा जाता है यानी वे जो अनश्वर हैं, उन्हें संस्कृत वर्णमाला के प्रथम वर्ण 'अ' द्वारा दर्शाया जाता है जो हमें स्मरण कराता है कि ब्रह्मा वे सत्ता हैं जिनकी उत्पत्ति परम चेतना से सर्वप्रथम हुई।

पालनकर्ता विष्णु, 'उ' द्वारा दर्शाए जाते हैं। यह स्वर, ध्वन्यात्मक रूप से संस्कृत के अर्ध-व्यंजन, 'व' के समरूप है जो कि यहाँ पर विष्णु जी से सम्बन्धित है।

और संहारकर्ता, महेश या शिव को 'म्' अक्षर द्वारा दर्शाया जाता है।[३]

भारत के देवी-देवताओं के नामों में प्रायः अनेक अर्थ छिपे होते हैं। ऐसा ही भगवान 'गणेश' के नाम के साथ भी है जो दो शब्दों से मिलकर बना है : 'गण' यानी 'समूह' और 'ईश' यानी 'ईश्वर' या 'स्वामी।' पौराणिक कथाओं में गणेश जी को भगवान शिव के गणों के प्रमुख सेनापति [ईश] के रूप में बताया गया है। इसका और गहरा अर्थ देखें तो गणेश जी को समस्त प्राणियों के स्वामी के रूप में जाना जाता है और उन विभिन्न शक्ति-समूहों के अधिपति के रूप में जाना जाता है, जो शक्तियाँ ॐ से प्रस्फुटित होती हैं और जिनके बारे में ऐसी मान्यता है कि ये शक्तियाँ ही इस ब्रह्माण्ड का सृजन करती हैं।[४]

इससे हम देख सकते हैं कि क्यों तुकाराम महाराज, श्रीगणेश जी को समस्त सृष्टि के 'माता-पिता' कहते हैं।

इस अभंग के तीसरे और अन्तिम पद में तुकाराम महाराज कहते हैं, "यह वेदवाणी है। आप व्यास जी के पुराणों में इस विषय में पढ़ सकते हैं।" सन्त-कवि यह कह रहे हैं कि इस अभंग में वे आदि नाद के ज्ञान और अनुभव की, तथा कैसे इसे भगवान श्रीगणेश की आराधना से प्राप्त किया जा सकता है उसकी

झलक मात्र दे रहे हैं, परन्तु इसके बारे में कहने को और भी बहुत कुछ है। असल में, इस विषय में कहने के लिए *इतना* कुछ है कि पुराणों के सैकड़ों संस्करणों में इस बारे में विस्तार से लिखा गया है। ऐसी है महिमा और महत्ता ॐ की और उसकी जिसे भगवान श्रीगणेश दर्शाते हैं।

©२०२२ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

इस अभंग की रिकार्डिंग सिद्धयोग बुकस्टोर पर उपलब्ध है।

---

[१] जॉन ए. ग्राइम्स, *Gaṇapati: Song of the Self* [ऑल्बनी, न्यूयॉर्क : SUNY प्रेस, १९९५] पृ ७७-७८।

[२] ग्राइम्स, *Gaṇapati,* पृ ४५-४६।

[३] 'ॐ' [अ, उ, म्] का प्रतीकात्मक भावार्थ डॉ. बोरइन लॅरिओस [युनिवर्सिटी ऑफ़ हाइडलबर्ग, जर्मनी, अगस्त २०१८] के साथ व्यक्तिगत पत्राचार द्वारा प्राप्त किया गया है।

[४] ग्राइम्स, *Gaṇapati,* पृ ४१-४२; तथा लॅरिओस जी से पत्राचार द्वारा प्राप्त।